06 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनूभूति

सूर्यवंशी अर्थात मास्टर ज्ञान सूर्य आत्मा की अनुभूति

➢➢ सवमान में स्थित होना

➳ _ ➳ स्वयं के संपूर्ण स्वरूप को अपने ही सम्मुख देखती हूं

→ मैं सूर्यवंशी देवता घराने की ऊँच आत्मा हूं

■ तीव्र पुरुषार्थ द्वारा फर्स्ट डिवीजन में आने वाली मैं श्रेष्ठ आत्मा हूं

■ श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प द्वारा उसी संकल्प का स्वरूप बनती जा रही हूं

■ ज्ञान की हर प्वाइंट को धारण कर उसे अपने स्वरूप में ला रही हूं

➳ _ ➳ मास्टर ज्ञान सूर्य स्थिति का अनुभव

→ संगम युग कि इस पावन बेला में ज्ञान सूर्य शिव बाबा ने मुझ आत्मा को अपना वारिस बना लिया है

→ मैं मास्टर ज्ञान सूर्य आत्मा हूं

→ अपने पिता के समान मैं आत्मा इस सृष्टि के सर्व विकार रूप कीचडे को भस्म करने की जिम्मेवारी लेती हूं

■ ज्ञान सूर्य शिव बाबा के साथ मैं मास्टर ज्ञान स्वरूप आत्मा परमधाम में बीज रूप अवस्था का अनुभव कर रही हूं

■ मैं चैतन्य बीज रूप आत्मा इस सृष्टि के बीज रूप सर्वशक्तिमान शिव बाबा के साथ हूं

→ जैसे शमा के ऊपर परवाने फिदा हो जाते हैं वैसे शिव शमा पर स्वयं को फिदा करती जा रही हूं

→ बीज में बीज जैसे समाता जा रहा है

■ मैं मास्टर बीज रूप ज्ञान सूर्य आत्मा हूं

➳ _ ➳ इस संपूर्णता की स्थिति में मै मास्टर ज्ञान सूर्य आत्मा नीचे उतरती हूं इस साकार सृष्टि पर

→ इस सृष्टि में चारों और विकारों की कालिमा दिख रही है

→ चारों और अंधकार के इस वातावरण में मैं आत्मा सर्वशक्तिमान ज्ञान सूर्य का आवाहन करती हूं

→ शिव बाबा की किरणों की वर्षा के नीचे मैं मास्टर ज्ञान सूर्य आत्मा स्वयं की पवित्रता की किरणों को प्रज्वलित करती हूं

■ जैसे अग्नि में घी डालने से वह प्रचंड होती है ऐसे स्वयं की पवित्रता का संपूर्ण स्वरूप मैं आत्मा बाबा की किरणों की नीचे अनुभव कर रही हूं

→ अब इस सृष्टि पर पाट बजाती अनेक बीज रूप आत्माओं को देख रही हूं

→ हर एक बीज रूपी आत्मा को पवित्रता रूपी जल की किरणों से पावन कर रही हूं

- हर एक आत्मा पतित से पावर होती जा रही है
- विश्व कल्याण की जिम्मेवारी मैं सूर्यवंशी देवात्मा निमित्त बन निभा रही हूं